औज़ार बनाने वाले कौए

शेष प्रकृति से हमें (यानी इंसानों को) अलग करने वाली एक बात यह मानी जाती है कि हम लगातार अपने औजारों में सुधार करते रहे हैं। मगर अब यह क्षमता भी अन्य जीवों में देखी गई है। कैलिडोनियन कौआ एक ऐसा जीव है जो न सिर्फ औजार बना लेता है, बल्कि पूर्व की डिज़ाइन में सुधार भी करता रहता है। और दिलचस्प बात यह है कि चिम्पैंज़ी तक इस तरह से अपने औजारों में चरण-दर-चरण सुधार नहीं करते।

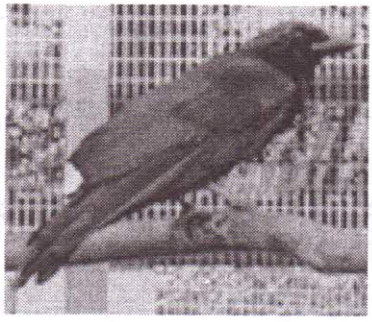

दरअसल टेक्नालॉजी में सतत सुधार की क्षमता हमारी सफलता (एक प्रजाति के रूप में हमारी सफलता) की कुंजी रही है। मसलन जिस ढंग से हमारे पूर्वजों ने पत्थर के अपने औजारों को उन्नत किया। न्यूज़ीलैण्ड के ऑकलैण्ड विश्वविद्यालय के केविन हंट-रसेल ग्रे ने हाल ही में देखा कि कैसे ग्राण्ड टेरे और मेयर द्वीप के कौए अपने औजारों में क्रमिक सुधार करते हैं। केविन हंट का कहना है, हमारी खोज के बाद इंसानों और अन्य जानवरों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर भी अब नहीं रहा। हंट ग्रे अपने शोध के निष्कर्ष प्रोसीडिंग्स ऑफ दी रॉयल सोसायटी में प्रकाशित करने जा रहे हैं।

पिछले वर्ष ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एलेक्स केसलिंक ने बताया था कि ये न्यू कैलिडोनियन कौए कई चीज़ों को काट-छांटकर भोजन प्राप्त करने के औजार बनाते हैं। ये कौए औजार बनाने के लिए केवड़े की पत्तियों का भी उपयोग करते हैं। ऑकलैण्ड विश्वविद्यालय के दल ने केवड़े की पत्तियों से बने औजारों का अध्ययन किया। कौओं ने इन पत्तियों से चार प्रकार के औजार बनाए थे - चौड़े, संकरे, एक कटान वाले और एकाधिक कटान वाले। चौड़े वाले औजार बनाना सबसे आसान है मगर इनकी मदद से दरारों में घुसे कीड़ों को नहीं निकाला जा सकता। संकरे औजार बेहतर ज़रूर हैं मगर ये मुड़ जाते हैं। इस मामले में कटान वाले औजार बेहतर हैं। ये मज़बूत भी होते हैं और इनका सिरा नुकीला होता है।

शोधकर्ता पता करना चाहते थे कि इनमें से कौन-सा औजार पहले आया। इसके लिए उन्होंने विभिन्न डिज़ाइनों का भौगोलिक वितरण देखा। यह देखना आसान है क्योंकि कौए इस औजार को साबुत पत्ती से सीधे काट लेते हैं। शेष पत्ती वहीं पेड़ पर लगी रहती है। उसे देखकर बताया जा सकता है कि इसमें से कैसा औजार बनाया गया है। कई पेड़ों पर तो ऐसी सौ-सौ पत्तियां मिल जाती हैं।

पता चला कि सारी डिज़ाइनों का वितरण भौगोलिक रूप से निरंतर व अलग-अलग है मगर एक स्थान पर चारों मिलती है। इससे पता चलता है कि प्रत्येक डिज़ाइन एक बार ही विकसित हुई है और कौओं ने एक-दूसरे को देख-देखकर नई डिज़ाइन बनाना सीख लिया। केसलिंक का कहना है कि यह बात लगती तो ठीक है मगर अभी पक्का नहीं कहा जा सकता है। प्रत्यक्ष अवलोकन से ही कुछ प्रमाण मिल सकते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***